आमंत्रण

शिक्षा एक खोज

शिक्षाविदों बुद्धिजीवियों और विद्यार्थियों का समागम

प्रति,

_____

_____

_____

Point of Discussion

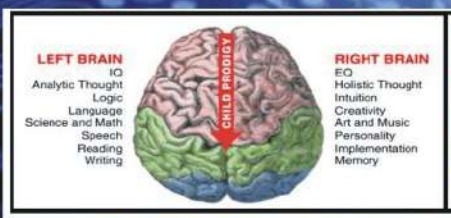

अगर आपके मन में भी ये सवाल है तो ये संगोष्ठी सिर्फ आपके लिए है

- मेरा बच्चा बडा होकर क्या करेगा ?
- क्या हमारा Education System सही है ?
- क्या वो सही दिशा में जा रहा है ?
- मेरे बच्चे के लिए सही Career क्या रहेगा ?
- क्या आप बच्चे के Result से संतुष्ट है ?
- अलग से ट्यूशन के बाद भी मेरा बच्चा अच्छा स्कोर क्यों नहीं कर पाता ?
- मेरा बच्चा अजीब सा व्यवहार क्यों करता है ?
- हमेशा तनाव में क्यों रहता है ?
- मैं अपने बच्चे के अंदर छुपी प्रतिभा को कैसे जान सकता हूँ/ सकती हूँ ?
- क्या आप चाहते हैं कि आपके बच्चे की मोबाईल की गन्दी आदत छूटे ?

STEPapp
SCHOOL EDUCATION GAMIFIED
BYJU'S
The Learning App
MIND
MARATHON
Google
education
unacademy
India's largest free education initiative
RJ
New way to start Brighter life
SCANNING

शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि हम किसी प्रकार के हुनर को सीखें। जिससे कि हम अपने वर्तमान जीवन में उसका उपयोग कर सकें। शिक्षा हमें यह सिखाती है कि हमें अपना जीवन कैसे जीना चाहिये। शिक्षा हमें सिखाती है कि हमारा व्यक्तित्व कैसा होना चाहिये। शिक्षा हमे जीवन में क्या करना है और अपनी जीविका कैसे चलानी है, इस हेतु हुनरमंद बनाती है। शिक्षा हमारे अन्दर छिपी हुई प्रतिभा को निखारने का काम करती है। शिक्षा हमे सिखाती है कि समाज में हमे कैसा व्यवहार करना चाहिये। लेकिन हम वर्तमान शिक्षा में देख रहे हैं कि केवल किताबी ज्ञान रह गया है। किताबों में लिखे ज्ञान को ना प्राप्त करके हम केवल परीक्षा में पास होने को ही अपना उद्देश्य मान बैठे है जिस कारण शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य से हम भटक चुके हैं। इस समागम में हम कोशिश करेंगे कि हम शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को पा सकें।

समागम का उद्देश्य

मित्रों,

जैसा कि हमने देखा है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में ना ही अभिभावक, ना ही विद्यार्थी, न ही शिक्षक ना ही विद्यालय संतुष्ट हो पा रहे हैं। शिक्षा का जो वास्तविक उद्देश्य है सीखना व एक बेहतर कैरियर पाना, वह इस शिक्षा पद्धिती से सम्भव नहीं हो पा रहा है। अधिकांश विद्यार्थी यह जान ही नही पाते कि हम क्या पढ रहे है? क्यों पढ रहे हैं? किसलिये पढ रहे हैं? हम यह देखते हैं कि स्कूल में बच्चें मुख्यत: परीक्षा में पास होने के लिये पढते हैं जिससे वे वास्तविकता में कुछ सीख ही नही पाते। अगर हम उच्च शिक्षा की बात करें तो अधिकांश ग्रेजुएट वह काम ही नही कर रहे हैं जिसकी उन्होने डिग्री ली हुई है। यह इस बात का प्रमाण है कि शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों को हम नही प्राप्त कर पा रहे हैं। यदि हम इस पर विचार करें कि यह क्यों व किसलिये हो रहा है तो निश्चित है बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे। इस हेतु यह समागम रखा गया है।

प्राचीन शिक्षा v/s वर्तमान शिक्षा

प्राचीन काल में गुरुकुल पद्धिती में विद्यार्थियों के गुणों को पहले पहचाना जाता था और उसी के अनुसार उनको शिक्षा दी जाती थी। जैसे महाभारत में पांचों पाण्डवों को गुरु द्रोणाचार्य ने पढाया था परन्तु वे अलग अलग विद्या में निपुण थें जैसे युधिष्ठिर में भाला फेंकने की कला थी ,अर्जुन को धर्नुविद्या में महारथ हासिल थी ,भीम का गदा युद्ध में कोई सानी नही था तथा नकुल और सहदेव त्रिलोकदर्शी विद्या में निपुण थे। क्योंकि इनके शारिरिक ,मानसिक और बौद्धिक स्तर अलग अलग थे ,अतः उसी को पहचान कर गुरु द्रोणाचार्य नें उन्हे अलग अलग विद्या में निपुण बनाया। परन्तु वर्तमान परिवेश में ऐसा नही हो पा रहा है। हमारे यहां पर एक निश्चित पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों की निहित क्षमताओं को पहचानें बिना उसको केवल उस पाठ्यक्रम को पूरा करने पर फोकस किया जाता है। इस कारण जिस क्षमता में बच्चा विकास कर सकता था उसके लिये उसे समुचित समय व दिशा निर्देश नही मिल पाता। जिस कारण उसकी वह क्षमता विकसित ही नही हो पाती। अगर वर्तमान शिक्षा पद्धिती में कुछ समुचित परिवर्तन किये जायें तो निश्चित ही बेहतर परिणामों तक पहुंचा जा सकता है।

दिमाग की कार्यप्रणाली

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हमारा मस्तिष्क दो भागों में बटा हुआ है दाँया भाग और बाँया भाग। दायें भाग में अलग क्षमताएं होती है और बायें भाग में अलग। अगर हम इस क्षमताओं को पहचानकर बच्चों को सिखाएं तो वह जो सीखेंगे वह उन्हे जीवन के अन्तिम क्षण तक याद रहेगा क्योंकि हमारा दाँया मस्तिष्क हमें याद रखने में काफी सहायता करता है। और यदि हम समझानें के तरीके को मजेदार ढंग से प्रस्तुत करें तो वह चीज हमें निश्चीत ही जीवन भर याद रहेगी।

दिमाग की संरचना

विज्ञान ने साबित किया हैं कि दिमाग कि एक ही पाली के भीतर दायॉ और बायॉ दिमाग अलग अलग विशिष्ट भूमिकायें आदा करता हे। तो मस्तिष्क दिमाग दस भागो में बॉटा गया है। पॉच दॉया ओर पॉच बॉया , प्रत्येक भाग विशिष्ट ओर पूर्व निर्धारित कार्य चलाते हे। हमारे मस्तिष्क में **बारह सौ करोड न्यूरान** कोशिकायें हे। जिस भाग में अधिक न्योरान कौशिकाये हो उस व्यक्ति को उस काम का आनंद मिलता हे। वो काम उसे अच्छा ओर आसान लगेगा यह उसका ताकत वाला क्षेत्र हो जायेगा तथा जिस भागो में कम न्योरान कौशिकायें हो वह व्यक्ति उससें नफरत करेंगे वह काम उसे अच्छा नहीं लगेगा और मुश्किल लगेगा यह उसका कमजोर क्षेत्र हो जायेगा।

DMIT ?

DERMATOGLYPHICS MULTIPLE INTELLIGENCE TEST

It is a scientific study of fingerprint patterns

Invented By
Dr. Harold Cummins

It is a scientific study of Brain Lobes and its usages

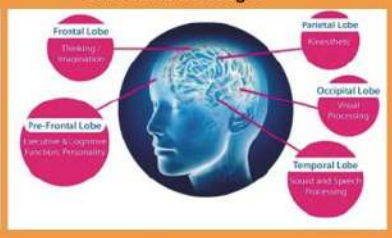

Invented By
Dr. Howard Gardner

फिंगर प्रिंट ही क्यों....

जैसा कि सर्वविदित है कि बच्चे का भविष्य तो भ्रूण में ही तय हो जाता है वो सीखना तो माँ के पेट से ही शुरु कर देता है। उसकी उँगलियों की संरचना उसके मस्तिष्क से जुड़ी रहती है। और उसका मस्तिष्क ही उसकी अभिरूचि और क्षमताओं को विकसित करता है। फिंगर प्रिंट स्केन करके और उसको समझकर के उसके मस्तिष्क को समझने की कोशिश करें तो निश्चित रूप से हम उस बच्चे के बारे में सभी उपयोगी जानकारी को एकत्रित कर सकते हैं। जो कि उसके भविष्य में निर्णय लेने में सहायक सिद्ध होगी।

फिंगर प्रिंट के द्वारा निम्म जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

- जानिये आपका बच्चा कौन सा पैदाईशी गुण लेकर पैदा हुआ है।
- बच्चे का कौन सा ब्रेन ज्यादा एक्टिव है – तार्किक या रचनात्मक।
- उसकी पर्सनालिटी कौन सी है – ईगल, पीकॉक, ऑउल, या डोव।
- वह पढ़ाई में कैसे ज्यादा अच्छा सीख सकता है – देखकर, सुनकर या स्पर्श इन्द्रियों का उपयोग करके।
- वह किस क्षेत्र में अपना कैरियर ज्यादा अच्छा बना सकता है – इंजीनियर, डॉक्टर, एग्रीकल्चर, डिजाईनिंग, स्पोर्ट्स, कला या अन्य।
- पढ़ाई के अतिरिक्त किस क्षेत्र में वह ज्यादा अभिरुचि रखता है – नृत्य, संगीत, नाटक, पेन्टिग, घुडसवारी, तैराकी या किसी अन्य फील्ड में।
- 9 प्रकार की मल्टीपल इंटेलिजेन्स

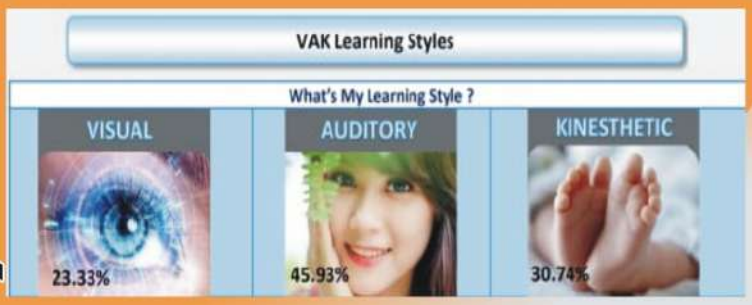

हमारा दृष्टीकोण

क्योंकि हर बच्चा खास होता है और खास होती है हर बच्चे के अन्दर की जन्मजात प्रतिभाएं। हम उनकी इन्ही अद्वितीय विशिष्ठ प्रतिभाओं को पुरातन गुरुकुल पद्धति की सोच और आधुनिक टेक्नोलॉजी के आधार पर पहचान कर उनको पूर्णरुपेण विकसित करने की दिशा में अग्रसर हैं। आईये साथ मिलकर अपने नौनिहालों के लिये एक सुखद व समृद्ध भविष्य की कल्पना को साकार करें जिसके वह वास्तविक हकदार हैं।

Benefits with us

- Discover Inborn Stregnth and Weakness
- Makes Academic and Career Choices easier
- Enhances learning experience by identifying Preferred Learning Styles
- Benefits of DMIT Personalize Academic and Extra Curriculum Programs
- Builds Confidence

बहुबुद्धि सिद्धांत

MULITIPLE INTELLIGENCES

कहा जाता है''बुद्धिर्यस्य बलंतस्य''अर्थात जिसमें बुद्धि है,वही बलवान है। डॉ. हॉवर्ड गार्डनर ने 1983 में बहुबुद्धि सिंद्वात दिया जिसके अनुसार हर इंसान में अलग प्रकार की बुद्धि होती है। जेसे कोई तार्किक क्षमता में पारंगत होता है ,कोई संगीत में कोई अभिनय में तो कोई लेखन में डॉ. गार्डनर ने कहा है ''हर एक सीखने वाला व्यक्ति यह सब बुद्धिमत्ता दिखा सकता है, किन्तु कुछ ज्ञान दूसरे से ज्यादा मात्रा में विकसित है''। बुद्धि के सिंद्वात को समझाने के लिए इसे 9 क्षेत्रो में विभाजित किया गया है। जानिये आपके बच्चे में कौन सी बुद्धि या बुद्धियों का समूह विद्यमान है।

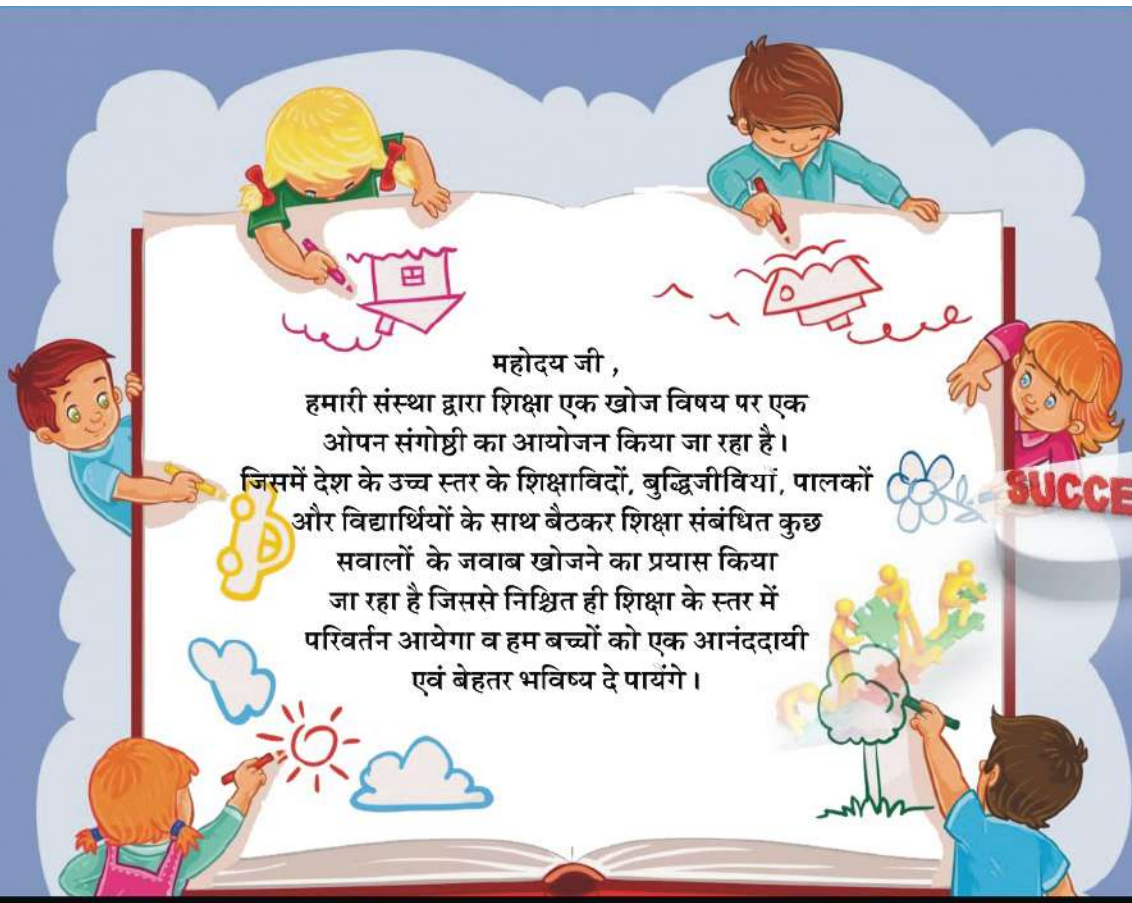

यदि आप अपने बच्चे का
उज्जवल भविष्य चाहते हैं
और

UPTO 1 Crore

की

स्कॉलरशिप

चाहते हैं तो कार्यक्रम में
जरूर पधारें।

FROM Rahul Jain
Project co-ordinator
Mob.9773870339

OUR TEAM

Om Prakash Hotwani
Mob.7987130188

Madhuri Raghuwanshi
Mob.8827271501

Nishabh Singh Thakur
Mob.9303412600

Ankit Tiwari
Mob.8269860666